आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Breaking Personal & Generational Bondages)

व्यक्तिगत और पीढीगत बंधनों को तोड़ना

विषयसूची

परिचय

1. पीढ़ियों के बंधन क्या हैं? 1
2. अधर्म और पाप 8
3. क्या है जो परिवार के बंधनों के लिए दरवाजे खोलता है? 12
4. व्यक्तिगत और पारिवारिक बंधनों को पहचानना 19
5. इससे हम कैसे छुटकारा पा सकते हैं? 22
6. अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न 30
7. तैयारी 39
8. प्रार्थना 40

परिचय

कुछ समस्याएं, जिनका लोग सामना करते हैं उनका आरंभ पिछली पीढ़ियों द्वारा हो सकता है। इसमें से कुछ कारण ऐसे किसी एक व्यक्ति के द्वारा उत्पन्न हुए हो सकते हैं जिसने पापयुक्त जीवनशैली का अनुसरण किया हो या पिछली पीढ़ी में शैतानी गतिविधियों में सहभागी रहा हो। उदाहरणार्थ, किसी परिवार में, दादा ने दिवालियापन का अनुभव किया होगा, और यही उनके किसी एक बेटे को भी हुआ होगा। इस बेटे के बच्चे हों और उनमें कुछ दिवालिया बन गए। अतः, पीढ़ी दर पीढ़ी, एक या उससे अधिक लोग एक ही प्रकार की समस्या से प्रभावित रहे होंगे।

दूसरे उदाहरण का विचार करें जहां पर दादा को शराब की गहरी आदत हो। बाद में उसका बेटा भी अपने जीवन में शराबी बन गया हो और यह समस्या तीसरी पीढ़ी तक पहुंच जाती है। यह एक पैटर्न (आदत या अभ्यास) हो सकता है जहां पर वे सभी एक ही समस्या से जूझते हैं। पारिवारिक वंशावली में ऐसा कुछ हो सकता है—और न केवल एक व्यक्ति जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस प्रकार के अभ्यास का निर्माण करता है। निरंतर होने वाली इन समस्याओं का क्या कारण हो सकता है, जीवनशैली व्यवहार, जीवन के अनुभव, विपत्तियां इत्यादि? क्या ऐसी समस्याएं जो पीढ़ियों में दोहराई जाती हैं, उनके पीछे आध्यात्मिक कारण हैं? यदि ऐसा है, तो हमें केवल लक्षणों को दूर करने की अपेक्षा उसे गहराई में जाकर इसके मूल कारणों से निपटने का प्रयास करना होगा जो आध्यात्मिक हो सकता है।

पीढ़ियों के बंधनों के उदाहरण

जीवन में हम जिन समस्याओं का सामना करते हैं, वे पीढ़ियों के बंधनों

के कारण हो सकते हैं—पापमय आचरण और जीवनशैली जैसे झूठ बोलना, धोखा देना, क्रोध, हिंसा, जुआ खेलना, शराब का सेवन, नशीली दवाओं पर निर्भर रहना, व्यभिचार, अनैतिकता, हानिकारक व्यक्तित्व, दुर्व्यवहार, आत्महत्या की प्रवृत्ति, सदैव कार्य में व्यस्त रहना। यह सूची बढ़ती ही जाती है—बार-बार आने वाले रोग, तलाक, आर्थिक दिवालियापन, कारोबार में बार-बार विफलता, अन्य क्षेत्रों में विफलताएं, अवसाद, मानसिक / भावनात्मक अस्वस्थता, डर, असुरक्षा, अपने बारे में हीन भावना, दुत्कारा जाना, निर्धनता, खानपान की समस्याएं, विवाह से पहले उत्पन्न बच्चे, भौतिक या भावनात्मक समस्या, बांझपन, गर्भपात, बार-बार "दुर्घटनाएं होना," और अस्वाभाविक या असमय मृत्यु भी "पीढ़ियों के बंधनों" के कारण हो सकते हैं।

यह कोई एक सार्वभौमिक उपाय नहीं

इस अध्ययन में आगे बढ़ने से पहले, हमें यह समझना है कि पीढ़ीगत बंधनों की समस्याओं का सामना करना हर समस्या का समाधान नहीं है। पीढ़ियों के बंधनों को समझना और तोड़ना आवश्यक तौर पर जीवन की सभी समस्याओं को नहीं सुलझाता। यह आवश्यक नहीं है कि कोई भी समस्या पीढ़ियों के बंधनों से उत्पन्न हुई हो। उदाहरणार्थ, किसी व्यक्ति को निरंतर सिर दर्द होता है, उसका कारण केवल यह हो सकता है कि वह ठीक से नहीं सो रहा हो, न कि पीढ़ियों के बंधन से! अतः हमें यह निष्कर्ष निकालने से पहले सावधानी बरतना आवश्यक है कि समस्या पीढ़ीगत बंधनों द्वारा उत्पन्न हुई है। हमें सिर्फ यही एक कारण समझकर उसी के अनुसार समाधान नहीं ढूंढ़ना है। शायद समस्या को उत्पन्न करने वाले अन्य कारण भी हो सकते हैं।

अन्य सम्मिलित कारण

जबकि कुछ निश्चित पापपूर्ण आचरण के अभ्यास एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आते हैं, पर इसमें अन्य कई कारण भी सम्मिलित हो सकते हैं।

आत्मिक कारणों के अलावा, व्यक्तिगत, अनुवंशिक, और पर्यावरण सम्बंधी कारण भी हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, किसी व्यक्ति को नशीली दवाओं पर निर्भर रहने की समस्या है जिसका कारण गलत प्रभाव में गलत जीवन शैली को अपनाना हो, ऐसा नहीं कि पिछली पीढ़ी में किसी के साथ यह समस्या रही हो।

इस सत्य को जानने और लागू करने की आवश्यकता

जो भी हो, हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि पीढ़ियों के बंधन क्या हैं और यह जानना है कि इस सत्य को कैसे लागू करें, ताकि यदि पीढ़ियों का बंधन समस्या का मूल कारण है, तो हम जान पाएंगे कि स्थायी समाधान ढूंढ़ निकालने के लिए हमें क्या करना चाहिए। जब तक हम समस्या का मूल कारण नहीं ढूंढ़ पाते, तब तक हम कभी उसके लिए स्थायी समाधानों को नहीं ढूंढ़ पाएंगे। हमें यह सत्य स्वयं के लिए, और दूसरों की सेवा करते समय भी लागू करना है।

इफिसियों 6:12
क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परंतु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

हमारी लड़ाई *"लहू और मांस"* से है—लोगों के साथ नहीं है—परंतु आत्मिक दुष्टता से, शैतानी शक्तियों से, अंधकार की ताकतों से, शैतान से, और उसकी दुष्टात्माओं से है जो हम पर आक्रमण करने की और हमारे विरोध में आने की कोशिश करते हैं। इसमें एक आत्मिक संघर्ष शामिल है। अतः, जिन समस्याओं का हम सामना करते हैं उन समस्याओं का मूल कारण आध्यात्मिक होता है।

परमेश्वर का वचन हमें चेतावनी देता है कि हम शैतान को कोई स्थान न दें—*"और न शैतान को अवसर दो"* (इफिसियों 4:27)। हमें

सावधान रहना है कि हम उसे किसी प्रकार से प्रवेश न दें। हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि शैतान कैसे कार्य करता है और हमारे जीवनों में कैसे प्रवेश प्राप्त करता है। केवल तभी हम जानेंगे कि शैतान का सफलतापूर्वक सामना कैसे किया जा सकता है। यदि हम उचित रीति से यह निर्धारित नहीं कर पाए कि शैतान हमारे जीवनों में कैसे प्रवेश करता है, तो उसे हमारे जीवनों से कैसे दूर रखना चाहिए इसे हम नहीं समझ पाएंगे। यदि हम समस्या की जड़ को दूर नहीं करेंगे, तो मानो हम "छाया से लड़ते रहेंगे"—वास्तविक व्यक्ति के बजाए उसकी छांव से लड़ेंगे।

शब्द एवं शब्दावली

अधिकांशतः मसीही जगत में, "पारिवारिक शाप" और "पीढ़ियों का शाप" जैसे शब्दों का उपयोग किया जाता है। इस पुस्तक में, हम "शाप," इस शब्द का उपयोग नहीं करते। बल्कि, हम "बंधन" इस शब्द का उपयोग करते हैं, केवल इसलिए क्योंकि हम यह अनुभव करते हैं कि यह अधिक विस्तृत रूप से समस्या के स्वरूप का सही वर्णन करता है। शब्द "शाप" सामान्य तौर पर मौखिक उच्चारण का उल्लेख करता है, जिसे हमारे जीवनों पर बोला गया है। परंतु, हम बंधन के क्षेत्रों का सामना कर रहे हैं जहां दुश्मन ने हमारे पारिवारिक वंश में प्रवेश पाया है और आने वाली पीढ़ियों के द्वारा उस वंश वृक्ष में विभिन्न व्यक्तियों को बंधक बनाकर रखता है। कभी कभी, "पारिवारिक शाप," "पीढ़ियों का शाप," और "पीढ़ियों का बंधन" आदि संज्ञाओं का अदल-बदलकर उपयोग किया जा सकता है। परंतु, सबसे महत्वपूर्ण बात इस सत्य को समझना और उसे हमारे जीवनों में लागू करना है, फिर चाहे हम किसी भी शब्दावली का उपयोग करें।

परमेश्वर आपको आशीष दे!

आशीष रायचूर

1
पीढ़ियों के बंधन क्या हैं?

निर्गमन 20:3-6
[3] "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।
[4] "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है।
[5] तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ,
[6] और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूँ।

परमेश्वर हमें दो आज्ञाएं देता है। पहली यह है कि उनके अलावा दूसरा कोई और परमेश्वर नहीं है, और दूसरा यह है कि किसी को भी, कोई भी खुदी हुई मूर्ति के सामने झुकना नहीं चाहिए। प्रभु इन आज्ञाओं के उल्लंघन करने के परिणामों का भी उल्लेख करता है और कहता है कि यह अपराध आने वाली पीढ़ियों में जारी रहता है, तीसरी और चौथी पीढ़ियों तक, अतः, हम देखते हैं कि यदि कोई विशिष्ट पीढ़ी झूठे देवताओं और मूर्तियों के सामने दण्डवत करती है, तो वह उनके जीवनों में "अपराध" को प्रवेश करने के लिए द्वार खोल देती है और उसे आने वाली पीढ़ियों में भी पहुंचाया जा सकता है। इसे हम "पीढ़ियों का बंधन" कहते हैं।

यह पहली बार है जहां पीढ़ियों के बंधन की अवधारणा का उल्लेख किया गया है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यह स्वयं परमेश्वर द्वारा बताया गया था। इसलिए, पीढ़ियों की अवधारणा लोगों द्वारा समझी जाने वाली "कल्पना" नहीं थी जो डर के बंधन में थे, या

अगुवों द्वारा जिन्होंने डर के माध्यम से लोगों को सताने की कोशिश की। प्रभु परमेश्वर ही है जिसने लोगों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ियों तक अपराध के आगे बढ़ाए जाने के विरोध में चेतावनी दी।

इन विचारों को अन्य स्थानों में कम से कम चार बार दोहराया गया है। अतः, हम बाइबल के किसी अलग उदाहरण के आधार पर ईश्वरीयविज्ञान की स्थापना नहीं कर रहे।

पवित्र शास्त्र में ऐसे अन्य स्थान हैं जहां पर इसे दोहराया गया है:

निर्गमन 34:7
हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेवाला है, परंतु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।

गिनती 14:18
कि यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परंतु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है।

व्यवस्थाविवरण 5:9
तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूँ।

यिर्मयाह 32:18
तू हज़ारों पर करुणा करता रहता परंतु पूर्वजों के अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंश के लोगों को भी देता है, हे महान् और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है।

मूर्तिपूजा

मूर्तिपूजा गलत है! परमेश्वर मूर्तियों की आराधना करने से मना करता है। हमें किसी भी खोदी हुई, कागज की, इलेक्ट्रोनिक्स प्रतिमा की या अन्य किसी की आराधना नहीं करना चाहिए। हमें आत्मा और सच्चाई के साथ केवल सच्चे और जीवित परमेश्वर की आराधना करना है। इसलिए, हम कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछ सकते हैं:

- मूर्ति या प्रतिमा के सामने दण्डवत करना गलत क्यों है—चाहे यीशु की हो, किसी संत की, या किसी और की?
- यीशु के तस्वीर की उपासना करना गलत क्यों है?

मूर्तियों की उपासना करने के बारे में पवित्र शास्त्र क्या कहता है इस पर विचार करें।

1 कुरिन्थियों 10:19-22

19 फिर मैं क्या कहता हूँ? क्या यह कि मूर्ति पर चढ़ाया गया बलिदान कुछ है, या मूर्ति कुछ है?
20 नहीं, वरन् यह कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं; वे परमेश्वर के लिये नहीं परंतु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो।
21 तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के साझी नहीं हो सकते।
22 क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते हैं? क्या हम उस से शक्तिमान हैं?

पवित्र शास्त्र के अनुसार, मूर्ति कोई महत्व नहीं रखती। परंतु, जिन वस्तुओं को मूर्तियों की उपासना में बलिदान किया जाता है वे वास्तव में दुष्टात्माओं को बलिदान चढ़ाई जाती हैं, और जीवित परमेश्वर को नहीं। और यह हमें दुष्टात्माओं के साथ सहभागिता की ओर ले जाता है, और दुष्टात्माओं को उनके जीवनों में प्रवेश देता है। जब हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं, तब हम जीवित

परमेश्वर की सहभागिता में होते हैं, और वह हमारे हृदयों और जीवनों में प्रवेश करता है। उसी तरह, जब लोग मूर्तियों के सामने दण्डवत करते हैं और उनकी उपासना करते हैं और बलिदान चढ़ाते हैं, तब वे दुष्टात्माओं के साथ सहभागिता रखना आरंभ करते हैं और इन मूर्तियों के साथ जुड़ी दुष्टात्मा की शक्तियों की सहभागिता में आने लगते हैं और उन शक्तियों को अपने जीवनों में प्रवेश देने लगते हैं।

सावधानी का शब्द

हमें इस सत्य को सावधानी, प्रेम और नम्रता से अपने उन मित्रों से बांटना हैं जो मूर्तिपूजा में श्रद्धा रखते हैं।

नीतिवचन 16:21
जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझवाला कहलाता है, और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।

व्यवस्थाविवरण 7 में, परमेश्वर मूर्तियों के बारे में अपने लोगों को स्पष्ट निर्देश देता है।

व्यवस्थाविवरण 7:25,26
25 उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जला देना; जो चाँदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फँसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं।
26 और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

परमेश्वर अपने लोगों को शापित वस्तु घर में लाने के विरुद्ध चेतावनी देता है। उन्हें मूर्तियों को सजाया हुआ अनमोल गहना भी लाने की अनुमति नहीं थी। ऐसी चीज़ें परमेश्वर की दृष्टि में तिरस्कृत हैं - ऐसी चीज़ें जिनसे परमेश्वर घृणा करता है। जो लोग शापित वस्तु लाते

थे वे मूर्तियों से जुड़ी हुई शक्तियों के बंधन में आ जाते थे। बंधन और विनाश उनके जीवनों में प्रवेश करेगा। यह दूसरा कारण है कि क्यों मूर्तियों की उपासना करना गलत है। यदि हम इस विषय में परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं, तो मूर्ति के पीछे जो शक्तियां हैं, वे हम बंधन में रखेगी और हम भी उसी विनाश के भागी होंगे जो इन मूर्तियों पर आएगा।

जिसकी हम उपासना करते हैं, हम उसी के समान बन जाते हैं। *"जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं; और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएंगे"* (भजन संहिता 115:8)। हम हमारे उपासना के विषय की समानता में बन जाते हैं। जब हम मूर्ति के सामने दण्डवत करते हैं या उसकी सेवा करते हैं, तब उस मूर्ति के द्वारा कार्य करने वाला आत्मा हमारे जीवनों में स्थान प्राप्त करता है (प्रभाव का क्षेत्र) और हमें बंधन में रखता है, और हमें बार-बार उसके आगे झुकने के लिए प्रेरित करता है। यह बारी बारी से हम, हमारे बच्चों और उनके वंश को जाता है, हमारे वंश वृक्ष में आगे बढ़ता है, और उन्हें भी उसके आगे दण्डवत करने के लिए प्रेरित करता है।

व्यक्तिगत बंधन बनाम पीढ़ियों के बंधन

वह अपराध या अधर्म जिसे हमने अपने जीवनों में प्रवेश दिया होगा, जो आज हमें प्रभावित कर सकता है, उसे हम "व्यक्तिगत बंधन" कहेंगे। यदि हम अपने जीवनों पर से उसकी सामर्थ को नहीं तोड़ते तो उसमें हमारे आगे की पीढ़ियों तक जाने की क्षमता होती है। यदि वह आने वाली पीढ़ियों में पहुंचता है, तो हम उसका उल्लेख "पीढ़ियों के बंधन" के रूप में करते हैं। कुछ लोग पीढ़ियों के बंधन के अधीन दुख उठाते होंगे, जो उन्होंने विरासत में पाया, और ज़रूरी नहीं कि उसे उन्होंने अपने जीवन में अनुमति दी हो। जैसा कि पहले बताया गया है, ये बंधन कई प्रकार की बातें हो सकती हैं—पापमय आचरण और जीवनशैली

के नमूने जैसे, झूठ बोलना, धोखा देना, क्रोध, हिंसा, जुआ खेलना, नशीली दवाओं का इस्तेमाल, आत्महत्या की प्रवृत्ति, शराबी होना आदि। जीवन की अन्य समस्याएं—बार-बार बीमार पड़ना, तलाक, आर्थिक दिवालियापन, कारोबार में बार-बार विफलता, अवसाद, मानसिक / भावनात्मक समस्या, डर, असुरक्षा, हीनता की भावना, तिरस्कार, निर्धनता, खानपान की समस्याएं, विवाहपूर्व सम्बंधों से जन्मे बच्चे, भौतिक या भावनात्मक विकलांगता, बांझपन, गर्भपात, बार-बार दुर्घटना होना, "दुर्घटना की सम्भावना" होना और अस्वाभाविक या असमय मृत्यु, इस प्रकार की बातें बंधनों की वजह से हो सकती हैं।

यहां पर हमारा उद्देश्य यह सीखना है कि व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बंधनों को कैसे तोड़ें।

लालच मूर्तिपूजा है

पुराना नियम मूर्तियों और प्रतिमाओं के सामने दण्डवत करने का उल्लेख मूर्तिपूजा के रूप में करता है। परंतु, नए नियम में यह थोड़ा व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है जहां पर लालच को भी मूर्तिपूजा के एक स्वरूप के रूप में व्यक्त किया गया है।

कुलुस्सियों 3:5
इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है।

इफिसियों 5:5
क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूर्तिपूजक के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं।

किसी भी प्रकार का लालच या असंयमित वासना मूर्तिपूजा के समान है। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी में अनियंत्रित इच्छा है—

एक बुरी आदत—तो इसे भी मूर्तिपूजा माना जाता है और उसके वही परिणाम होते हैं जिसमें लत या बुरी आदतों में पदार्थों का गलत प्रयोग, अश्लील तस्वीरें आदि देखना, शराब, अनैतिक जीवनशैली आदि का समावेश है। जो आत्मा मूर्तिपूजा के साथ जुड़ी हुई है वही सक्रिय होकर उस व्यक्ति को बंधक बना सकती है। इसलिए भले ही हमारे घरों में वास्तव में मूर्तियां नहीं होंगी, परंतु हमें यह जांचने की ज़रूरत है कि क्या हमारे हृदयों में लालच है।

पीढ़ियों की आशीष

दूसरी ओर, बाइबल हमें पीढ़ियों की आशीष के बारे में सिखाती है। पीढ़ियों की आशीष का एक बड़ा उदाहरण अब्राहम के जीवन में देखा जा सकता है, जहां परमेश्वर उसे बताता है कि वह और उसके सारे वंशज आशीष प्राप्त करेंगे।

उत्पत्ति 17:7
और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात् पीढ़ी–पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग–युग की वाचा बाँधता हूँ, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूँगा।

यशायाह 59:21
यहोवा यह कहता है, "जो वाचा मैं ने उनसे बाँधी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैं ने तेरे मुँह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुँह से, और तेरे पुत्रों और पोतों के मुँह से भी कभी न हटेंगे।"

सच्चे और जीवित परमेश्वर के द्वारा की हुई वाचा ने पीढ़ियों की आशीष को वास्तविक रूप में लाया।

2
अधर्म और पाप

अधर्म एवं पाप

"अधर्म" और "पाप" शब्दों की समझ से हमें पीढ़ियों के बंधनों को और अधिक सही रूप से समझने में सहायता प्राप्त होगी। दोनों शब्दों का उपयोग पवित्र शास्त्र में किया गया है:

निर्गमन 34:9
और उसने कहा, "हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो प्रभु हम लोगों के बीच में होकर चले; ये लोग हठीले तो हैं, तौभी हमारे अधर्म और पाप को क्षमा कर और हमें अपना निज भाग मान के ग्रहण कर।"

"अधर्म" शब्द का मूल शब्द इब्रानी में है *'एवन'* जिसका अर्थ है, "दुराग्रह या हठीलापन" जबकि "पाप" के लिए शब्द है *'खटावौ'* जिसका अर्थ है "अपराध।" सामान्य तौर पर, हम यह निरीक्षण कर सकते हैं कि "अधर्म" का सम्बंध व्यक्ति के स्वभाव से होता है, हमारे अंदर कुछ है जो हमें पाप का कार्य करने हेतु प्रेरित करता है, जबकि "पाप" गलत कार्य है। यह वह कार्य है जिससे हमारा उद्देश्य चूक जाता है और हमसे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करवाता है।

अधर्म पीढ़ियों तक पहुंचता है

परमेश्वर ने कहा कि अधर्म एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंच गया। किसी ने पाप किया परंतु वह अधर्म जिसने उस व्यक्ति को पाप करने के लिए प्रेरित किया पीढ़ियों में आगे बढ़ता रहा। विलापगीत 5 में, हम पढ़ते हैं कि जिस अधर्म ने पूर्वजों को पाप करने के लिए प्रेरित किया,

वह उनके बच्चों तक पहुंच गया।

विलापगीत 5:7
हमारे पुरखाओं ने पाप किया, और मर मिटे हैं; परंतु उनके अधर्म के कामों का भार हम को उठाना पड़ा है।

यिर्मयाह 32:17,18
17 'हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़ी सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है।
18 तू हज़ारों पर करुणा करता रहता परंतु पूर्वजों के अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंश के लोगों को भी देता है, हे महान् और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है।

भजन संहिता 51:5
देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।

जिस समय हमारा जन्म हुआ, पाप हम तक पहुंच गया था।

क्या इसकी अनुमति देकर परमेश्वर न्याय कर रहा है?

यह अन्यायपूर्ण लगता है कि किसी भी व्यक्ति को पिछली पीढ़ी में पूर्वजों द्वारा किए गए कार्यों का परिणाम भुगतना पड़े। व्यक्ति इसे कैसे समझा सकता हैं?

पूर्वजों के अधर्म के द्वारा बच्चों को, नाती-पोतों को प्रभावित करने की अनुमति देना यह अन्यायपूर्ण है। आगे हम अन्य स्थानों में पढ़ते हैं जहां परमेश्वर स्पष्ट करता है कि पाप करने वाला व्यक्ति मरेगा।

हम दो वचनों को देखते हैं:

व्यवस्थाविवरण 24:16
पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला

जाए; जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।

यहेजकेल 18:1-4,20
1 फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा:
2 "तुम लोग जो इस्राएल देश के विषय में यह कहावत कहते हो, 'खट्टे अंगूर तो खाए पुरखा लोगों ने, परंतु दाँत खट्टे हुए बच्चों के' इसका क्या अर्थ है?
3 प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की शपथ, तुम को इस्राएल में फिर यह कहावत कहने का अवसर न मिलेगा।
4 देखो, सभों के प्राण तो मेरे हैं, जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।
20 जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।

पिता को उनके बच्चों के लिए मारा नहीं जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के पापों से मरेगा। । यहां पर, इब्रानी में "पाप" के लिए दिया गया शब्द मूल शब्द से है *'खटे'* जिसका अर्थ है "अपराध।"

यह भ्रमित करने वाला हो सकता है। जबकि कम से कम पांच वचन हैं जो कहते हैं कि अधर्म बच्चों और उनके बच्चों तक आ पहुंचेगा, तो ये दो वचन लगभग असंगत प्रतीत होते हैं। इसे अच्छी तरह समझने के लिए हमें "अधर्म" और "पाप" के मध्य अंतर को याद रखना होगा।

परमेश्वर न्यायी परमेश्वर है

परमेश्वर न्यायी परमेश्वर है। इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है कि परमेश्वर न्यायी है और वह अन्याय नहीं करता। हमें न्यायिक प्रणाली द्वारा दिए जाने वाले "दंड" और "परिणाम"जो गलत कार्यों द्वारा उत्पन्न होता है, इनके मध्य अंतर को समझने की ज़रूरत है। पाप का दंड पाप करने वाले व्यक्ति द्वारा वहन किया जाएगा। उस पाप का परिणाम उस एक पाप करने वाले व्यक्ति की तुलना में अन्य

व्यक्तियों के जीवनों को प्रभावित कर सकता है।

एक परिवार के उदाहरण पर विचार करें जहां पिता एक बड़ी फर्म में उच्च अधिकारी के रूप में काम करता है। पिता बड़ी मात्रा में पैसों का गबन करता है और उसे देश के कानून द्वारा दोषी ठहराया जाता है और उसे 10 साल कैद की सजा सुनाई जाती है। भले ही वह अकेले ही पाप का दंड वहन करता है, जो कि 10 वर्ष की कैद है, उसके पूरे परिवार को—उसकी पत्नी, उसके सभी बच्चों, और यहां तक कि उसके पोते-पोतियों को भी उसके अपराध का परिणाम भुगतना पड़ सकता है। परिवार के सदस्यों को बहुत अधिक भावनात्मक पीड़ा सहनी होगी और परिवार की प्रतिष्ठा भ्रष्ट हो सकती है। यहाँ परिणाम दंड से अधिक हैं।

व्यवस्थाविवरण 24 और यहेजकेल 18 में, परमेश्वर पाप के दंड का उल्लेख करता है—*"जो प्राणी पाप करे वही मरेगा"*—परंतु अन्य पांच संदर्भ (निर्गमन 20:3-6; निर्गमन 34:7; गिनती 14:18; व्यवस्थाविवरण 5:9; यिर्मयाह 32:18) (**उदाहरण**: मूर्तिपूजा) जहां पर हम अधर्म के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाए जाने के बारे में पढ़ते हैं, यहाँ पाप के परिणामों का उल्लेख किया गया है। कुछ पाप ऐसे होते हैं (जैसे मूर्तिपूजा) जिसके लिए व्यक्ति न केवल उस पाप के लिए दंड भुगतता है, साथ ही भारी परिणाम भी भुगतता है। यहाँ दुष्टात्माओं की गतिविधि के लिए द्वार खोला जाता है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता है। इसका परिणाम हर पीढ़ी को भुगतना पड़ेगा। परमेश्वर न्यायी है इसीलिए वह दुष्टों को दण्डित करता है, जबकि उस व्यक्ति के पापों के परिणाम उसकी अगली पीढ़ी तक बढ़ते चले जाते हैं । उस बंधन को तोड़ना जो आरंभ हो गया है उसमें परमेश्वर हस्तक्षेप करके इसे तब तक नहीं रोकेगा, जब तक कि हम उस बंधन को तोड़ने के अधिकार का और मुक्ति का दावा न करें। इसके लिए हमें वही करना है, जो परमेश्वर का वचन कहता है।

3
क्या है जो परिवार के बंधनों के लिए दरवाजे खोलता है?

श्रापों का एक कारण

नीतिवचन 26:2
जैसे गौरैया घूमते-घूमते और सूपाबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता।

शापों का एक कारण होता है। वे यूं ही नहीं होते हैं। गौरैया और सूपाबेनी (एक पक्षी) किसी भी ढंग से नहीं उड़ते हैं, लेकिन एक "आंतरिक परिधि" द्वारा निर्देशित किए जाते हैं। इसी तरह, शाप केवल संयोगवश नहीं आते; आम तौर पर शाप का एक कारण होता है। इसलिए, जब हम जानते हैं कि शाप कैसे काम करते हैं, तो हम जानेंगे कि उन्हें रोकने के लिए आवश्यक सावधानी कैसे बरती जाए।

आइए हम कुछ ऐसे कारणों पर विचार करें जो हमारे जीवन में अधर्म के द्वार खोलते हैं, जिससे पीढ़ीगत बंधन होते हैं।

मूर्तियों की या झूठे देवताओं की उपासना

इस विषय में हमने इस पुस्तक में पहले भी देखा है। जब व्यक्ति झूठे देवताओं के सामने सिर झुकाते हैं और उनकी आराधना करते हैं, तब अधर्म भविष्य की पीढ़ियों तक बढ़ चुका होता है। (निर्गमन 20:5)।

बलिदान या समर्पण

जब व्यक्ति अपने बच्चे, या परिवार को दुष्टात्मा का प्रभाव रखने वाली किसी वस्तु का या झूठे देवी-देवता—के समक्ष समर्पित करता है या बलिदान चढ़ाता है, वह पारिवारिक बंधन के लिए द्वार खोल देता है।

मन्नत या प्रतिज्ञा

मन्नत एक गंभीर प्रतिज्ञा है जिसे व्यक्ति अपने किसी कार्य, सेवा या उद्देश्य की प्राप्ति होने पर स्वयं पर शर्त के रूप में बांध देता है। प्रतिज्ञा जो नकारात्मक, पापपूर्ण, और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दुष्टात्माओं के सामने ली जाती है और यही दुष्टात्माओं की गतिविधि और बंधन के द्वार खोलती हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति किसी मूर्ति के सामने प्रतिज्ञा करता है कि यदि उसकी विशेष प्रार्थना का उत्तर दिया गया, तब वह इसके बदले कुछ देगा, तो वह मन्नत पीढ़ी के बंधन के लिए द्वार खोल सकती है।

पापमय कार्य

वह पाप जिनको स्वीकार नहीं किया जाता है वह दुष्टात्मा की गतिविधि के प्रवेश हेतु द्वार खोल देता है। इसका एक अच्छा उदाहरण राजा दाऊद है (2 शमुएल 12), जिसने बतशेबा को प्राप्त करने की इच्छा को पूर्ण करने हेतु हत्या और व्यभिचार किया। नातान भविष्यवक्ता ने दाऊद को चेतावनी दी कि उसके पापमय कार्य के कारण तलवार उसके परिवार का पीछा न छोड़ेगी।

2 शमुएल 12:9-13

[9] तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है।

10 इसलिये अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी कर लिया है।'
11 यहोवा यों कहता है, 'सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूँगा; और तेरी पत्नियों को तेरे सामने लेकर दूसरे को दूँगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा।
12 तू ने तो वह काम छिपाकर किया; पर मैं यह काम सब इस्राएलियों के सामने दिन दुपहर कराऊँगा'।'"
13 तब दाऊद ने नातान से कहा, "मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।" नातान ने दाऊद से कहा, "यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा।"

यहाँ "तलवार" शब्द , विनाश, हिंसा और मृत्यु की ओर इंगित करता है। दाऊद ने उसके परिवार में विनाश, हिंसा और मृत्यु के द्वार खोल दिए। दाऊद के पुत्र अम्मोन ने अपनी ही बहन के साथ बलात्कार और दुष्कर्म किया। जिसने उसके दूसरे पुत्र अबशालोम को उसके अपने पिता के विरोध में विद्रोह हेतु बाध्य किया।

कभी-कभी एक पापमय कार्य का परिणाम इतने लंबे समय तक होता है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए, जानबूझकर किया गया गर्भपात का कार्य आध्यात्मिक मृत्यु के द्वार खोलता है जिससे विनाश और अधर्म का द्वार खुलता है जिससे, अन्य क्षेत्रों मे भी जैसे व्यापार आर्थिक स्थिति आदि क्षत्रों मे विनाश हो सकता है। पाप जो स्वीकार नहीं किया जाता है वह शैतानी गतिविधि के लिए एक खुला द्वार बना रहता है। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन में पाप को अंगीकार करें, पश्चाताप करें और पाप को त्याग दें। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हमारे जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे पाप पर हम जय पाएं। हमें किसी भी प्रकार की शैतानी गतिविधि के लिए द्वार बंद करने की आवश्यकता है।

उत्पत्ति 4:7
यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न

करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है।

उत्पत्ति 4:7 में, परमेश्वर ने कैन से उस समय बात की जिस समय वह अत्यधिक क्रोधित था और भाई को मारने के लिए तैयार था। परमेश्वर ने उसे उस पाप के बारे में चेतावनी दी जो दरवाजे पर इंतज़ार कर रहा था और प्रवेश करने की कोशिश कर रहा था। परमेश्वर ने उस पर जय पाने के लिए कहा। लेकिन कैन ने पाप को प्रवेश करने दिया और हत्यारा बन गया।

दर्दनाक घटनाएं या अनुभव

भावनात्मक घावों के लिए नकारात्मक प्रतिक्रियाएं हमारे जीवनों में अनजाने भय का द्वार खोल सकती हैं, जो आने वाली पीढ़ियों में भी जारी रह सकता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति जिसने कार दुर्घटना का सामना किया हो, वह भावनात्मक रूप से इतना परेशान हो जाता है कि भय की आत्मा उस व्यक्ति के जीवन में प्रवेश कर सकती है। वह व्यक्ति सड़क पर यात्रा करने के लिए इतना भयभीत हो सकता है, कि वह कार के अंदर फिर से बैठने के लिए अपने आप को असुरक्षित महसूस कर सकता है। यह डर आगे चलकर अगली पीढ़ियों में भी जा सकता है और अन्य क्षेत्रों में भय के रूप में भी प्रकट हो सकता है। किसी प्रियजन की मृत्यु, दुर्व्यवहार, दुखभरी घटनाओं को देखना अन्य दर्दनाक अनुभवों के उदाहरण हो सकते हैं जो लोगों को बंधनों में बांधते हैं।

श्राप और जादूटोना

शाप और जादूटोना स्पष्ट रूप से हमारे जीवन में पीढ़ीगत बंधनों के द्वार खोलते हैं। कम से कम इन तीन बातों द्वारा वे सक्रिय होते हैं।

1) स्वयं पर लादे गए शाप

अनजाने में, हमारे शब्द ही हमारे श्रापों का आधार बन सकते हैं। जिसे हम क्रोध,घृणा, चोट, और निराशा के दबाव में आकर बोलते हैं। अपने स्वयं के शरीर के बारे में, अपने रंग-रूप के बारे में, भावनाओं, के बारे में नकारात्मक बातें बोलने से हम अपने आप पर शाप ला सकते हैं। स्वयं पर थोपे गए शाप लोगों के साथ व्यवहार करने की योग्यता और जीवन में कुछ निश्चित अनुभवों का आनंद उठाने में बाधा ला सकते हैं।

उदाहरण हैं :

- "मैं अपने मां-बाप के समान नहीं बनूंगा" (ऐसा कोई जिसके बचपन की यादें दुखभरी हैं) ।
- "मेरे बच्चे नहीं होंगे" (ऐसा कोई जो प्री-स्कूल में या बच्चों की कलीसिया में काम करने वाला है और जिसने बच्चों के साथ कठिन समय का सामना किया हो) ।
- "मेरे बच्चे इतने भयानक हैं" (जब माता-पिता बच्चों के बारे में कहते रहते हैं कि वे भयानक हैं, तो वे सचमुच भयानक हो सकते हैं) ।
- "मैं कभी यौन का आनंद नहीं लूंगा" (यौन शोषण और शारीरिक दुर्व्यवहार के शिकार)।
- "मैं पुरुषों से नफरत करती हूं (स्त्रियां)।"
- "मैं कभी दूसरे किसी पुरुष (स्त्री) को मेरे पास नहीं आने दूंगी" (टूटे हुए रिश्ते के बादं)।

2) पिछली पीढ़ियों द्वारा लिए गए शाप

पिछली पीढ़ी द्वारा स्वेच्छा से लिए गए श्राप से आने वाली पीढ़ियां प्रभावित होती हैं।

मत्ती 27:25
सब लोगों ने उत्तर दिया, "इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो!"

3) व्यक्तियों / परिवार के सदस्यों पर किए गए मंत्र-तंत्र / जादूटोना

जो लोग जादू-टोना करते हैं, वे जानबूझकर या तो व्यक्तियों पर या पूरे परिवार पर जादू कर सकते हैं, और इससे पीढ़ीगत बंधनों के द्वार खुल जाते है।

4) पारिवारिक विरासत (वस्तु) की उपस्थिति जो घृणित हो

जिसे पारिवारिक विरासत की अद्भुत वस्तु माना जाता होगा, जिसे परिवार का हर सदस्य चाहता है, वास्तव में एक अभिशाप ला सकता है, यदि यह किसी भूतविद्या में एक झूठे देवता को समर्पित किया गया हो। किसी वस्तु की पृष्ठभूमि से अनजान होना और उसे घर लाना और अपने घरों को उसे सजाना, बंधन का कारण बन सकता है।

व्यवस्थाविवरण 7:25,26
25 उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जला देना; जो चाँदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फँसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं।
26 और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

5) परिवार के मुखिया (पिता) के निर्णय

पिता जो निर्णय लेते हैं वे अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अपने परिवारों के आत्मिक प्रधान हैं। कई बार, वह पूर्वजों के बंधनों का कारण भूतविद्या में और किसी निश्चित धार्मिक संस्थाओं से सहभागिता हो सकते हैं। ज्योतिषी से की गई एक छोटी मुलाकात भी पीढ़ियों के बंधन के

लिए द्वार खोल सकती है। परिवार के मुखिया द्वारा ज्योतिषविद्या में सहभागिता, हस्तरेखा पढ़ना, भविष्य राशिफल बताना, संमोहन, फ्री मेसनरी(किसी गुप्त संस्था के सदस्य होना), ताबीज पहनना, जन्मरत्न, और इस प्रकार की वस्तुओं आदि का अभ्यास उनके बच्चे एवं आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए दुष्टात्माओं की गतिविधि के लिए द्वार खोल सकता है।

4
व्यक्तिगत और पारिवारिक बंधनों को पहचानना

यूहन्ना 10:10
चोर किसी और काम के लिये नहीं परंतु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएं।

परमेश्वर चाहता है कि हमें बहुतायत का जीवन—संपूर्णता का जीवन प्राप्त हो। शैतान है जो चुराता है, घात करता है और नष्ट करता है।

हमें परिवार के उन विभिन्न बंधनों को समझना और यह देखना आवश्यक है कि जो हमारे स्वयं के जीवनों को और हमारे परिवार को प्रभावित करते हैं और क्या उसमें पीढ़िगत बंधन के चिन्ह हैं? हम अपने जीवनों का एक आत्मिक सर्वेक्षण करें और किसी भी व्यक्तिगत तथा पीढ़िगत बंधन को नाश करने हेतु कदम बढ़ाएं।

कारण और प्रभाव सदैव प्रत्यक्ष रूप से जुड़े नहीं हो सकते

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि कारण और परिणाम का हमेशा ही सीधा सम्बंध नहीं होता। उदाहरण के तौर पर, कोई व्यक्ति हो सकता है जो अपनी नौकरी में स्थायी नहीं रह सकता। यह सम्भावना है कि हर छः महीने में, यह व्यक्ति नई ज़िम्मेदारी स्वीकार करता है। इस प्रकार की परिस्थिति में, हमें इसका निकटता से अवलोकन करने की आवश्यकता है कि इसका वास्तविक कारण क्या हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, हम देख सकते हैं कि वह व्यक्ति लोगों के प्रति

शत्रुतापूर्ण भावना रखता होगा और अंत में कार्यस्थल पर लोगों के साथ लड़ता होगा। साथियों के प्रति शत्रुता कारण हो सकती है। परंतु परिणाम यह है कि वह व्यक्ति उस नौकरी में स्थायी नहीं रह सकता। हिंसा की आत्मा के कारण वह व्यक्ति अपने साथियों के प्रति शत्रुता का भाव रखता है और आसपास के लोगों के साथ रिश्ता स्थापित नहीं कर सकता।

दूसरे उदाहरण पर विचार करें जहां एक विशिष्ट परिवार में अनियंत्रित क्रोध का पीढ़िगत बंधन है। इस परिवार का एक जवान व्यक्ति शादी करता है और इस प्रकार का आचरण उसमें जारी रहता है, अंततः उसकी शादी टूट जाती है और उसका अंत तलाक में होता है। कारण है अस्वाभाविक क्रोध का पीढ़िगत बंधन, जबकि परिणाम है शादी टूटना।

हमें अपने जीवनों का परीक्षण करने के लिए समय और प्रयास लगाना चाहिए, और या तो व्यक्तिगत या पारिवारिक बंधन को पहचानना चाहिए। हमारे विस्तृत परिवारों के प्रत्येक सदस्य के बारे में विचार करें और बार-बार होने वाले किसी नमूने को पहचानें ताकि देख सकें कि कोई अनुचित आचरण या बार-बार घटने वाली समस्या है। सम्भवतः, दादा के परिवार में असमय मृत्यु हो सकती है। फिर किसी चाचा का उसकी जवानी में देहांत हो गया, और अब हम इस डर में जी रहे हैं कि ऐसा हमारी पीढ़ी में भी होगा। यदि हम ऐसा कुछ पाते हैं जो पीढ़िगत बंधन के समान दिखाई देता होगा, तो हमें दरवाजा बंद करना है। ऐसा करके निश्चित कर लें कि वह समस्या भविष्य की पीढ़ियों तक न बढ़ पाए। यदि हम अपने जीवनों में ऐसी किसी बात के दोषी हैं जो सम्भवतः बंधन के लिए द्वार खोल देता है, तो हमें पश्चाताप करना है, उसे त्याग देना है, और स्वतंत्र होकर चलना है!

हम स्वतंत्र हो सकते हैं!

सुसमाचार यह है कि जब हम सत्य को जानेंगे, तब सत्य हमें स्वतंत्र करेगा। यीशु मसीह हमें स्वतंत्र कर सकता है!

यूहन्ना 8:32,36
32 तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
36 इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

5
इससे हम कैसे छुटकारा पा सकते हैं?

हमारा स्वतंत्र (मुक्त) होने का अधिकार क्रूस पर प्राप्त हो चुका था

1 यूहन्ना 3:8
जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।

हमारी स्वतंत्रता क्रूस पर प्राप्त हो चुकी थी। यीशु शैतान के प्रत्येक काम को नाश करने के लिए आया, फिर भी वह इसकी परवाह किए बिना, हमारे जीवन में कैसे प्रवेश कर गया। यीशु इस संसार में क्यों आया? यीशु हमें नया धर्म देने अथवा नया दर्शनशास्त्र देने के लिए नहीं आया कि हम उसका अनुसरण करें या उस बारे में सोचें। वह लोगों के जीवनों में शैतान के प्रत्येक कार्य को नाश करने के लिए आया। हमें अपने जीवनों में शैतान के कार्यों को सहन करने की आवश्यकता नहीं है।

आज संसार में ऐसे कई लोग हैं जो हमें नए दर्शनशास्त्र, विचार, और धर्म के बारे में बताते हैं। परंतु, कोई भी खड़े होकर यह नहीं कह सकता, "मैं शैतान के कार्यों को नाश कर सकता हूं।" केवल यीशु वह कर सकता है।

इब्रानियों 2:14
इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।

अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने उसे (शैतान को) नाश कर दिया जिसे मृत्यु की सामर्थ थी और उसने उसे निर्बल कर दिया। क्रूस पराजय का स्थान नहीं है बल्कि, महानतम ऐतिहासिक विजय का स्थान है! क्रूस ही था जहां यीशु ने शैतान को पराजित किया। उसे यह सब स्वयं के लिए करने आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह सदैव ही शैतान से बड़ा था, है, और रहेगा। उसने यह हमारे लिए- हमारे प्रतिनिधि के रूप में हमारी ओर से किया।

कुलुस्सियों 2:14,15
14 और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।
15 और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई।

प्रधानताएं और अधिकार शैतान और उसकी दुष्टात्माएं हैं। क्रूस पर, यीशु ने उन्हें पूर्ण रूप से निहत्था, बेकार, और निर्बल करके उन पर पूर्ण विजय प्राप्त की।

इफिसियों 6:12
क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परंतु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

यीशु ने शैतान को और उसकी दुष्टात्माओं की ताकतों को निहत्था कर दिया, उन्हें बेकार कर दिया, और क्रूस पर उसकी विजय प्राप्त करके उनका सार्वजनिक प्रदर्शन किया। वही यीशु हमारे संसार में कदम रख सकता है और हमें आज भी पूर्ण रूप से, और किसी भी दुष्टात्मा के बंधन से मुक्त कर सकता है।

इसका आपके लिए और मेरे लिए क्या मतलब है?

कुलुस्सियों 1:13,14
13 उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,
14 जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

इस प्रकार, उसने हमें अन्धकार (दुष्टात्माओं) के राज्य और अधिकार से छुड़ा लिया। जिस क्षण हमने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया, उसी क्षण से शैतान का हमारे ऊपर पर कोई वैधानिक अधिकार नहीं होता, क्योंकि हमें छुड़ाया गया है और स्वतंत्र किया गया है। हमें एक भिन्न राज्य में भेजा गया है, इस प्रकार हम यीशु मसीह के राज्य के नागरिक बन गए हैं और शैतान के राज्य के नागरिक नहीं रहे , और इसलिए इन अंधकार की शक्तियों का हमारे जीवनों पर कोई अधिकार नहीं है और हमारे आत्मा, प्राण, और शरीर पर उनका कोई अधिकार नहीं है। शैतान हमारे जीवनों में केवल तभी अधिकार प्राप्त कर सकता है जब हम उसे अपने जीवनों में प्रवेश देते हैं। पवित्र शास्त्र हमें चेतावनी देता है, *"और न शैतान को अवसर दो"* (इफिसियों 4:27)। इसलिए, द्वार बंद रखें। शैतान को आपके जीवन में कोई प्रवेश न दें!

लहू की सामर्थ

1 पतरस 1:18,19
18 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी-सोने अर्थात् नाशवान् वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ;
19 पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।

प्रेरित पतरस ने यहूदी तथा मसीही विश्वासियों की संमिश्र कलीसिया को सम्बोधित किया, जो पूरे एशिया माईनर के रोमी प्रांतों

में बिखरी हुई थी। पतरस यहूदी और अन्य जाति के मसीहियों को बताता है कि हम उस उद्देश्य रहित जीवन से छुड़ाए गए हैं, जो हमारे पूर्वजों द्वारा हमें दिया गया था। पतरस जिस छुटकारे की बात कर रहा है वह है मूर्ति पूजा का खोखलापन, अन्य धर्म,अंधविश्वास, फरीसियों की रीतियों से छुटकारा है।

यीशु के लहू ने हमारे लिए बहुत से कार्य किए हैं—उसने हमारे पापों को धो दिया और हमें शैतान की सामर्थ से छुड़ा लिया। मसीह के लहू ने व्यर्थ के चालचलन से भी हमें छुड़ाया हमारे पूर्वजों के द्वारा दिए वह हमारे पूर्वजों की वंश परम्परा या हमारे पुरखाओं की जीवनशैली या किसी विशिष्ट प्रकार की उपासना विधि हो सकती है जिसके कारण दुष्टात्माओं के प्रभाव के लिए द्वार खोल दिया होगा, यीशु मसीह का लहू हमें मुक्ति देता है। मसीह का लहू जो उन्होंने हमारे लिए क्रूस पर बहाया, दुष्टात्मा के प्रत्येक बंधन से, पापमय जीवनशैली, अनैतिक आचरण, समर्पण, और हमारे पूर्वजों के श्रापों के किसी भी स्वरूप से छुटकारा पाने का अधिकार प्रदान करता है।

कारावास के द्वार खुले हैं—आपको मुक्ति की ओर कदम बढ़ाना है

कारावास के द्वार खोल दिए गए हैं, अतः आपको मुक्ति की ओर कदम बढ़ाना है। यीशु ने हमारी मुक्ति के लिए वह सबकुछ कर किया जो उसके स्वयं के लिए आवश्यक नहीं था। उसका लहू बहाया गया है; उसने शैतान के कामों को नाश कर दिया और उस पर विजय प्राप्त कर ली है। परंतु हमें दरवाज़े से बाहर आने की और अपनी आज़ादी को स्वीकार करने और ग्रहण करने की आवश्यकता है। यीशु ने कहा, *"तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे"* (यूहन्ना 8:32,36)। अज्ञानता हमें बंधन में रखती है। परंतु सत्य द्वारा

हमें मुक्त होकर चलने का अवसर प्राप्त होता है।

आप आशीषित हैं!

इफिसियों 1:3
हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है।

परमेश्वर ने आपको हर एक आशीष से आशीषित किया है जो स्वर्ग से आती है। प्रत्येक आत्मिक आशीष जो स्वर्ग से आती है, वह आपकी है, क्योंकि परमेश्वर आपके लिए चाहता है कि आप आशीषित हों! परमेश्वर आपके लिए है और आपके विरोध में नहीं है।

सभी द्वारों को स्थाई रूप से बंद कर दीजिए

मत्ती 12:43-45
43 "जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है, और पाती नहीं।
44 तब कहती है, 'मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी।' और लौटकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है।
45 तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें पैठकर वहां वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।"

यीशु हमें अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि दुश्मन कैसे कार्य करता है। जब दुष्टात्माएं अपने क्षेत्र से निकाल दी जाती हैं, , तो वे लौटने का प्रयास करती हैं। इसीलिए द्वारों को बंद रखना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपने अश्लीलता के लिए द्वार खोला था और इस बंधन तोड़ने के लिए आपने स्वयं को पश्चाताप करने हेतु प्रेरित किया, परंतु द्वार बंद रखने के बदले आप थोड़ा बहुत अश्लील चित्र देख ही लेते हैं, तो आपकी दशा पहले से भी बुरी होगी। इसका कारण

यह है कि जब दुश्मन वापस आता है, तो वह और अधिक तीव्रता के साथ आता है। जब आप उन बंधनों को तोड़ते हैं, तब शत्रु उन्हीं क्षेत्रों में आकर और अधिक शक्ति पूर्वक आक्रमण करता है। शुद्धता का प्रभाव तब तक होता है जब तक कि, आप दुष्टात्माओं को फिर प्रवेश की अनुमति नहीं देते हैं, पश्चाताप न करते हुए निरंतर पाप करने के द्वारा। हमें सभी दरवाजों को स्थाई रूप से बंद करना है जिनके द्वारा दुष्टात्माओं को हमारे जीवनों में प्रवेश करती ।

अपने और हमारे पूर्वजों के पापों का प्रायश्चित करना और उन्हें छोड़ना

लैव्यव्यवस्था 26:39-42

39 और तुम में से जो बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं के देश में अपने अधर्म के कारण गल जाएंगे; और अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों के कारण भी वे उन्हीं के समान गल जाएंगे।

40 "पर यदि वे अपने और अपने पितरों के अधर्म को मान लेंगे, अर्थात् उस विश्वासघात को जो वे मेरा करेंगे, और यह भी मान लेंगे कि हम यहोवा के विरुद्ध चले थे,

41 इसी कारण वह हमारे विरुद्ध होकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है। यदि उस समय उनका ख़तनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे;

42 तब जो वाचा मैं ने याकूब के संग बांधी थी उसको मैं स्मरण करूंगा, और जो वाचा मैं ने इसहाक से और जो वाचा मैं ने अब्राहम से बांधी थी उनको भी स्मरण करूंगा, और इस देश को भी मैं स्मरण करूंगा।"

यहां पर, परमेश्वर अपने लोगों से कहता है कि वर्तमान पीढ़ी पिछली पीढ़ी के पापों के लिए पश्चाताप कर सकती थी। हम पवित्र शास्त्र में और भी उदाहरणों को देखते हैं।

यिर्मयाह 14:20

हे यहोवा, हम अपनी दुष्टता और अपने पुरखाओं के अधर्म को भी मान लेते हैं, क्योंकि हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है।

एज्रा, नहेम्याह, और दानिय्येल ने भी उनके पूर्वजों द्वारा किए गए पापों के लिए प्रायश्चित किया। अतः, यह मेरे और आपके लिए पवित्रशास्त्र एवं वचनानुसार सही है कि हम अपने पुरखों और पूर्वजों के पापों के लिए प्रार्थना करें और उनके लिए प्रायश्चित करें।

परमेश्वर द्वारा स्थापित अधिकार की संरचना

स्वाभाविक संसार में परमेश्वर ने अधिकारों की एक संरचना निर्धारित की है, जिसके द्वारा परमेश्वर कार्य करता है और शैतान उसका आदर करता है।

पति या पिता का अधिकार

1 कुरिन्थियों 11:3
परंतु मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

पत्नी का सिर पति है। पति या पिता अपने परिवार का आत्मिक पहरेदार या रक्षक है। आत्मिक अधिकार उस अधिकार संरचना के अनुसार प्रवाहित होता है जो परमेश्वर ने स्थापित किए हैं। दुश्मन के प्रभाव को अपने घर में अनुमति देना या न देना पति के हाथ में है। उसे अपनी पत्नी और परिवार की रक्षा करने का अधिकार और ज़िम्मेदारी है। पति को अपने अधिकारों को अपने हाथों में ग्रहण कर, द्वार बंद करना, और दुष्टात्माओं की सभी शक्तियों को उनकी पत्नियों और बच्चों को प्रभावित न करने की घोषणा करना है।

विश्वास करने वाले जीवनसाथी या अभिभावक का अधिकार

1 कुरिन्थियों 7:14
क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है; और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं

तो तुम्हारे बाल-बच्चे अशुद्ध होते, परंतु अब तो पवित्र हैं।

जब एक जीवनसाथी अविश्वासी होता है तो ऐसी स्थिति में, विश्वास करने वाला साथी उद्धार न पाए हुए जीवनसाथी पर आत्मिक प्रभाव डाल सकता है। यदि आप विश्वासी हैं, तो आप परिवर्तन ला सकते हैं, क्योंकि आपका विश्वास आपके अविश्वासी जीवनसाथी पर अधिकार रखता है। इस सम्बंध से जन्मे बच्चे भी विश्वास करने वाले जीवनसाथी के आत्मिक प्रभाव के अधीन होते हैं।

वर्तमान पीढ़ी के अधिकार

जबकि लैव्यव्यवस्था 26:39-42 में दिए गए संकेत के अनुसार पहले की गई सभी प्रतिज्ञाओं, समर्पणों और समझौतों पर हमारा अधिकार है।

6
अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

प्र1. जब मैं यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण करता हूं, तब मैं स्वीकार करता हूं कि उसका लहू मुझे मेरे सारे पापों से शुद्ध करता है। मैं अब भी अपने पूर्वजों के अधर्म के अधीन क्यों हूं? क्या यीशु का लहू मुझे अधर्म से भी शुद्ध करता है? जब प्रभु ने मुझे छुड़ाया है, तब क्या उसके छुटकारे में सारे बंधनों से छुटकारा सम्मिलित नहीं है? मुझे पीढ़ीगत बंधनों से स्पष्ट रूप से निपटने की आवश्यकता क्यों है?

जब हम यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं, तो हम वास्तव में अपनी आत्मा में नया जन्म लेते हैं और नई सृष्टि बन जाते हैं। यीशु मसीह का लहू हमारे पापों को धो देता है। जबकि, समस्या यह है कि हमारे पूर्वजों के अधर्म ने दुष्टात्माओं के बंधनों के द्वार खोल दिए जो आत्मा के दायरे—मन, इच्छा और भावनाओं—शरीर और जीवन के अनुभवों को प्रभावित करते हैं। जब परमेश्वर हमें बचाता है और हमें यीशु के लहू से धोता है, तो वह हमारी आत्मा, शरीर और हमारी परिस्थितियों को नहीं बदलता है।

उदाहरण के लिए, यदि मसीह को ग्रहण करने के समय आपके बाल सफेद हो रहे थे, तो इसके बाद भी बाल सफेद होने की सबसे अधिक संभावना है! या यदि आप नया जन्म पाने से पहले छः फीट लंबे थे, तो आप अपने जीवन में यीशु को ग्रहण करने के बाद भी उतने ही ऊंचे रहेंगे। एक पल में आप अपनी आत्मा के क्षेत्र में नई सृष्टि बन जाते हैं, लेकिन प्राण, शरीर और जीवन की स्थितियों के क्षेत्र में कई बंधन उपस्थित रह सकते हैं।

ऐसे कई विश्वासी हैं जो शुद्ध किए जाते हैं और परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी बन जाते हैं लेकिन अभी भी पापमय आदतों, भावनात्मक समस्याओं, और इसी तरह की अन्य समस्याओं से जूझ रहे हैं। इसलिए, जिन चीजों से निपटने की आवश्यकता हो सकती है उनमें से एक है पीढ़ीगत बंधन।

प्र2. निर्गमन 20:5,6 के अनुसार, परमेश्वर उन लोगों के अधर्म का दंड देता है जो उससे घृणा करते हैं और उन पर दया करता है जो उससे प्रेम करते हैं। मैं परमेश्वर से नफरत नहीं करता। बल्कि मैं उससे प्रेम करता हूँ, तो मुझे पारिवारिक बंधनों को तोड़ने की चिंता करने की क्या ज़रूरत है?

इसका उत्तर पहले प्रश्न के समान है। हम अपने दिल से परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और फिर भी कई बार हमारे प्राण और शरीर में बंधन के क्षेत्र हो सकते हैं; और हमारे जीवन की परिस्थितियों में शत्रु के कार्य हो सकते हैं जिनका परमेश्वर हमें विशेष रूप से सामना करने के लिए कह रहा है। परमेश्वर ने यह नहीं कहा, "मैं तुम्हारी ओर से शैतान का विरोध करूंगा।" इसके बजाय, उसने कहा, "तुम शैतान का विरोध करो।"

प्र3. जब तक कि मैंने पीढ़ीगत बंधनों को दूर नहीं किया है तब तक क्या मैं पीढ़ियों की आशीषों को आरम्भ करने वाला नहीं हो सकता ?

जब आप मसीह में आते हैं, तो आप अपने आप ही अब्राहम की आशीष और जो आप मसीह में हैं उससे जुड़ी आशीषों को प्राप्त करने वाले बन जाते हैं। अतः, आप अपने वंशजों के लिए पीढ़ीगत आशीषों को प्राप्त कर आगे बढ़ा सकते हैं, आगे आने वाली पढ़ियों के लिए आशीषों के स्त्रोत बन सकते हैं। यद्यपि आप अभी भी अपने पीढ़ीगत बंधनों

में हो सकते हैं जिनसे निपटने की आवश्यकता है। अतः, आप अपनी आने वाली पीढ़ियों को किस सीमा तक प्रभावित करेंगे, यह आपके परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के स्तर पर निर्भर करता है। यदि आप आलसी हैं और सोचते हैं, "मैंने उद्धार पा लिया। मुझे अपना 'आग का बीमा' मिल गया है। मेरे लिए इतना ही काफी है! मैं स्वर्ग जाऊंगा," और जीवन में यूं ही "तैरता रहूंगा," तो हो सकता है कि आपकी आने वाली पीढ़ियों पर आत्मिक रूप से आप अधिक प्रभाव न डालें। लेकिन यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं जो परमेश्वर में आगे बढ़ेंगे और परमेश्वर की बातों का—उसके आत्मा और उसके वचन—का अनुसरण करेंगे, तो आपकी आने वाली पीढ़ियों पर आपका अधिक प्रभाव पड़ेगा।

प्र4. क्या मैं अपने पूरे परिवार के स्थान में खड़ा हो सकता हूं और उनके लिए क्षमा मांग सकता हूं, या परिवार के प्रत्येक सदस्य को व्यक्तिगत रूप से ऐसा करना चाहिए?

परमेश्वर उस अधिकार संरचना के माध्यम से कार्य करता है जिसे उसने स्थापित किया है। उस अधिकार संरचना के आधार पर, आप अपने परिवार के सदस्यों पर कुछ हद तक प्रभाव डाल सकते हैं, लेकिन आपके आत्मिक निर्णयों का अधिकतम प्रभाव आपके बाद आने वाले लोगों द्वारा अनुभव किया जाएगा, जो आपके प्रभाव के दायरे में हैं। यदि यह परिवार के उन सदस्यों से सम्बंधित है जो आपके बड़े या आपके बराबर हैं, तो उन्हें अपने निर्णय खुद लेने होंगे, लेकिन आप अपनी प्रार्थना के माध्यम से उन्हें प्रभावित कर सकते हैं। चूंकि हम अपने परिवार के वर्तमान प्रतिनिधि हैं, इसलिए हमारे पास पहले की गई सभी प्रतिज्ञाओं, समर्पणों, समझौतों पर अधिकार है और हम जो भी बदलाव लाते हैं, वे हमारे बाद आने वाले लोगों को प्रभावित करते हैं।

प्र5. क्या अधर्म के कारणों की उत्पत्ति / उसे जानना / खोजना आवश्यक है, जो पीढ़ीगत बंधन की ओर ले जाता है?

लोगों ने जो देखा है उसके आधार पर, प्रतिज्ञाओं और श्रापों का सामान्य रूप से त्याग कर उन्हे न होने की घोषणा करना पर्याप्त है जिसके द्वारा अधिकतर मामलो में पारिवारिक बंधन और वे प्रवेश तोड़े जा सकते हैं जिसे शैतान ने पैतृक प्रतिज्ञाओं, समर्पणों और इसी तरह के माध्यम से प्राप्त किया है। लेकिन कुछ मामलों में, बंधन बना रहता है और थोड़ा गहरा और मज़बूत हो सकता है। इसके लिए, हमें इसकी जड़ तक पहुंचने की आवश्यकता है और यह पता लगाना कि यह कैसे आया और किस पूर्वज ने दुश्मन को परिवार वृक्ष में विशिष्ट चीजों को उलटने का अधिकार दिया। प्रायः , पवित्र आत्मा हमारे लिए उत्तरों को प्रकट करता है, या हम अपने परिवार के इतिहास से परिचित लोगों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

प्र6. क्या श्राप विश्वासियों को प्रभावित करते हैं?

इसका जवाब है "नहीं।" *"निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता, और इस्राएल पर भावी कहना कोई अर्थ नहीं रखता"* (गिनती 23:23अ)। अतः, शैतान की पहुँच उसी सीमा तक ही होती है जितनी हम उसे अनुमति देते हैं। उदाहरण के लिए, जब विश्वासी जादू-टोना करते हैं, डर में चलते हैं, या शैतान को अपने जीवन में प्रवेश का स्थान देते हैं, जो यह उन्हें शैतानी गतिविधियों को कार्यान्वित करने की अनुमति देता है, इसलिए विश्वासियों के लिए परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलना महत्वपूर्ण है।

प्र7. हमारा परमेश्वर ईर्ष्यालु परमेश्वर क्यों है?

जब आप पवित्र शास्त्र का परीक्षण करते हैं, तो लगभग हर बार हम परमेश्वर के बारे में पढ़ते हैं कि वह अपना उल्लेख ईर्ष्यालु परमेश्वर

के रूप में करता है, तो यह अन्य देवताओं या झूठे देवताओं की पूजा करने के संदर्भ में होता है। जब हम झूठे देवताओं की पूजा करते हैं तो ईश्वर ईर्ष्यालु ईश्वर है क्योंकि :

- **यह हमारे प्राथमिक उद्देश्य का उल्लंघन करना होता है, जो जीवित परमेश्वर की उपासना करना है।** हम केवल उसी की और उसी की आराधना करने के लिए बने हैं। *"क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला परमेश्वर है"* (निर्गमन 34:14)।
- **वह अपनी महिमा दूसरे को नहीं देगा।** *"मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूंगा"* (यशायाह 42:8)। जब कोई परमेश्वर की महिमा किसी और को देता है, तो परमेश्वर वह सहन नहीं करता ।
- **हम परमेश्वर को गलत रीति से प्रकट कर रहे हैं।** इससे परमेश्वर की पहचान बदलती है, कि वह जो वास्तव में है—सृष्टिकर्ता। *"इसलिये तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूँ? उस पवित्र का यही वचन है,"* (यशायाह 40:25)। उदाहरण के लिए, यदि किसी को आपकी तस्वीर लेनी हो, तो वह आपके सिर के स्थान पर एक तिलचट्टा लगा देता हो और यह कहता हो कि यह आप हैं, तो क्या आप इसे पसंद करेंगे? इससे आप प्रसन्न नहीं होंगे किन्तु "ईर्ष्या" करेंगे—जिसका अर्थ है कि आप क्रोधित होंगे कि उन्होंने ऐसा किया। अतः, जब हम सृष्टिकर्ता के बजाय किसी सृजित वस्तु की पूजा करते हैं। यह परमेश्वर को गलत रीति से प्रस्तुत करना है, और इसलिए परमेश्वर ईर्ष्या करता है।

प्र8. क्या "मसीही मूर्तियां" भी गलत हैं?

यदि हम किसी भी प्रकार की मूर्ति जो उपासना, मनन, या भक्ति का

विषय बन जाती है—फिर चाहे हम उसे किसी भी नाम से पुकारें या जिस भी रूप में प्रस्तुत करें, वह गलत है, भले ही वह मसीही उपासना के स्थान में हो।

हमें तथाकथित बालक यीशु के, या किशोर यीशु के, या मध्यआयु यीशु के पुतले की या तस्वीर की उपासना नहीं करना चाहिए या उनके सामने मोमबत्ती नहीं जलाना चाहिए! आप कैसे जान सकते हैं कि वह तस्वीर सचमुच यीशु की है? वह कोई और हो सकता है और आप उस व्यक्ति के सामने मोमबत्तियां जला रहे हैं और फूल चढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कहता है *"तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना ..."* (व्यवस्थाविवरण 5:8)

"मसीही" के पहले मूर्तियों को जोड़ना और यह कहना कि आप उसके द्वारा परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं, हास्यपूर्ण है। आप परमेश्वर की उपासना केवल *"आत्मा और सच्चाई से"* करते हैं (यूहन्ना 4:23,24)।

प्र9. मोमबत्तियां जलाने में गलत क्या है?

मोमबत्ती जलाना अपने आपमें गलत नहीं है, यह एक प्रतीक है।ऐसा हम कई अवसरों पर करते हैं : बिजली के जाने पर रोशनी के लिए, जन्मदिन पर, विवाह के समय पर एकता के प्रतीक के रूप में, अच्छे वातावरण के लिए, आदि। परंतु, जब हम ऐसा मूर्ति या प्रतिमा की उपासना के लिए करते हैं, तब हम इस बात का उल्लंघन करते हैं कि हमें आत्मा और सच्चाई से आराधना करना है (यूहन्ना 4:23,24)। यदि आपको लगता है कि आप किसी तस्वीर के सामने मोमबत्ती जलाते हैं, या यह कि वह आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर इसलिए देगा क्योंकि उसकी ज्वालाएं आपकी प्रार्थना स्वर्ग तक पहुंचाएगी, तब आप बचपना कर रहे हैं। बाइबल कहती है कि आत्मा और सच्चाई के साथ

परमेश्वर की आराधना करें, न कि मोम और आग से!

प्र10. मेरे घर में साथ रहने वाले/जीवनसाथी के पास मूर्तियां हैं। क्या इसका मुझ पर असर होगा?

नहीं। बाइबल कहती है कि हम ऐसे संसार में रहते हैं जो दुष्ट के नियंत्रण में है (1 यूहन्ना 5:18,19)। जहां कहीं हम जाते हैं, दुष्ट (दुष्टात्माओं) की उपस्थिति हमारे चारों ओर है, भले ही हम उन्हें देख नहीं सकते। इसलिए, जिस घर में आप रहते हैं जहां पर आपके कमरे में रहने वाला साथी या जीवनसाथी मूर्तियां रखता है, उसका आप पर प्रभाव नहीं होगा, जब तक कि आप परमेश्वर द्वारा आपको दिए गए वचन से अपनी रक्षा नहीं करते। इसलिए, आपको डरने की आवश्यकता नहीं है। अपने आपको शुद्ध करें, घर में अपना स्थान स्वच्छ रखें, और आप ठीक रहेंगे। दुष्ट उस व्यक्ति को स्पर्श नहीं कर सकता जिसने परमेश्वर से जन्म पाया है। उस दुष्ट अर्थात शैतान को डर या मूर्तियों की उपासना के द्वारा प्रवेश न दें। याद रखें कि आपमें श्रेष्ठ परमेश्वर रहता है (1 यूहन्ना 4:4)।

प्र11. क्या परमेश्वर यह (पीढ़िगत बंधन) करता है या इसे करने वाला शैतान है?

इस बात को समझें कि पूर्वजों के पापों, मन्नतों, और समर्पणों ने दुष्टात्मा के प्रभाव और बंधन के लिए द्वार खोल दिया है। सम्पूर्ण बाइबल में ऐसे अनुच्छेद हैं जहां वह कुछ "करता" है या "बीमारी भेजता है, बहरे और गूंगे बनाता है या दुष्टात्माओं को भेजता है।" सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र के अध्ययन के पश्चात इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर स्वयं "यह नहीं करता।" इसे करने वाला शैतान है।

परमेश्वर का एक विधान है जहां वह हर व्यक्ति की रक्षा करता है। यीशु कहता है कि परमेश्वर अपना सूरज अच्छे और बुरों पर

चमकाता है, अच्छे और बुरे पर बारिश भेजता है। अतः, जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा या व्यवस्था का उल्लंघन करता है, तो वह जानबूझकर उन क्षेत्रों में चला जाता है जहां शैतान उसे हानि, क्षति और विनाश का कारण बनाता है। आप इसके लिए परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते। व्यक्ति के कार्यों के परिणाम के कारण व्यक्ति परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली सुरक्षा से बाहर निकल जाता है, इस प्रकार शैतान को उसके प्रभाव, प्रभुत्व और सताने की अनुमति मिल जाती है। परमेश्वर लोगों को अपने निर्णयों का चुनाव करने और लोगों को उनकी रीतियों से कार्य करने की अनुमति देता है। सामान्यतः लोग जिस तरह से चुनाव करते हैं, वे उन्हें ऐसी जगह ले जाते हैं जहां शैतान उन्हें बंधन में रखता है। परमेश्वर ने अपनी पहचान यह कहते हुए प्रकट की है, *"मैं तुम्हारा चंगा करने वाला परमेश्वर हूं।"* उसने कहीं नहीं कहा कि, "मैं तुम्हारा रोग-दाता परमेश्वर हूं।" इसे आधुनिक शब्दों में कहें तो वह आपका "डॉक्टर" है।

सरल शब्दों में कहा जाए तो, जब आप बीमार होते हैं तब क्या आप डॉक्टर के पास यह कहते हुए जाते हैं, "डॉक्टर साहब!आज यदि आपकी इच्छा हो, यदि आपका मन लोगों की चंगाई करने का हो, और यदि आप इससे खुश हैं, तो क्या आप पता लगा सकते हैं कि मुझे क्या समस्या है और मुझे अच्छा महसूस कराने के लिए क्या आप कुछ कर सकते हैं?" जब हम डॉक्टर के पास जाते हैं तब हमारी स्पष्ट अपेक्षा यह होती है कि वह अपने ज्ञान के उपयोग द्वारा हमें चंगा करे, और बिगाड़े ना। लेकिन, परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में हम दोहरा मानक रखते हैं जिसने कहा है, "मैं यहोवा राफा (तुम्हारा चंगा करने वाला, तुम्हारा वैद्य), यहोवा यिरे (प्रयोजन करने वाला), यहोवा निस्सी (जो तुम्हें जय देता है), तुम्हारी रक्षा करने वाला, तुम्हारी धार्मिकता हूं," और हम उसे कहते हैं, "यदि आपकी पवित्र इच्छा हो तो मुझे चंगा कीजिए।" चंगा करना और आशीष देना परमेश्वर की इच्छा है। जब हम डॉक्टर से उस तरह बात नहीं करते, तो हम प्रभु से क्यों उस

प्रकार बोलते हैं? दूसरा सामान्य उदाहरण यह होगा कि परमेश्वर सारे लोगों को स्वर्ग का निमंत्रण देता है और फिर भी लोग स्वर्ग के बजाय नर्क का चुनाव करते हैं! परमेश्वर उन्हें वहां नहीं भेजता और इस बात के लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता। इसलिए, पीढ़ियों के बंधनों को लाने वाला परमेश्वर नहीं है। हमारे अपने पापमय कामों की वजह से यह शैतान का काम है।

7
तैयारी

- उन वस्तुओं को हटा दें जिन्हें आराधना हेतु उपयोग किया जाता था और किया जाता है। संदेह होने पर, उसे निकाल दें।
- किसी भी प्रकार के तंत्र, जादूटोना गलत शिक्षाओं- सम्मोहन विद्या भूतविद्या आदि से जो भी सहभागिता हो उसे त्याग दें - सम्मोहन, जादूटोना, ज्योतिषविद्या, राशी भविष्य, मन पढ़ना, अंक शास्त्र, हस्तरेखा पढ़ना, ताविज़, ज्योतिष, जन्म रत्न, भाग्य चिन्ह, राशि चक्र, और भारी धातु या रॉक संगीत में भागीदारी या जो भी अभक्ति को बढ़ावा देता है उनका बहिष्कार करें।
- झूठे धर्मों (यहोवा के साक्षी, फ्री मेसनरी), पंथ, झूठे देवताओं की उपासना, और ऐसे तत्त्वज्ञान जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध हों उनमें संलग्न होने से इन्कार करें।
- इस बात पर विश्वास करें कि प्रभु यीशु ने क्रूस पर क्या किया और, इस बात की परवाह किए बिना कि आपके पूर्वज किस बात के प्रति निष्ठावान थे, मसीह के प्रति अपनी निष्ठा की प्रतिज्ञा करें।
- परमेश्वर की आज्ञाकारिता के प्रति पूर्णतःसमर्पित रहें।
- अगर आप आशीष पाना चाहते हैं, तो परमेश्वर को अपना दशमांश और भेंट चढ़ाएँ।
- उसके वचन का पालन करें। पवित्र जीवन बिताएं।
- पवित्र आत्मा से उन क्षेत्रों को दिखाने के लिए कहें जहां आप और आपके पूर्वज बंधन में हो सकते हैं, और उन बंधनों से मुक्त होने के लिए निम्नलिखित प्रार्थना करें।

8
प्रार्थना

प्रभु यीशु,

मैं विश्वास करता हूं कि आप मेरे लिए क्रूस पर मर गए। क्रूस पर, आपने मुझे शैतान की हर सामर्थ से छुड़ाने के लिए अपना लहू बहाया। आपका लहू मुझे व्यर्थ और निरूपयोगी जीवनशैलियों से और ऐसे जीवन के परिणामों से जो मुझे मेरे पूर्वजों की ओर से मिले थे छुड़ाने के लिए बहाया गया। आपने मेरे लिए जो कुछ किया उस कारण आज, मैं अपने छुटकारे का दावा करता हूं।

मैं पश्चाताप करता हूं और मेरे जीवन के हर पाप और विद्रोह को त्यागने की घोषणा करता हूं। मैं मेरे पाप और विद्रोह के परिणामों से मुक्ति को प्राप्त करता हूं।

यीशु मसीह के नाम में और उसके लहू की सामर्थ से, मैं मेरे जीवन के प्रत्येक बंधन और शाप पर अधिकार लेता हूं जो मेरे पूर्वजों द्वारा मुझे सौंपे गए। मैं हर बंधन को तोड़ता हूं और हर शाप को और उसके सारे प्रभावों को रद्द करने की घोषणा करता हूं।

मैं सारी शपथों, शापों, समर्पणों, पापमय कार्यों, सदमा, समझौते, वफादारी की प्रतिज्ञाओं को रद्द करता हूं जिसने शैतान को मेरे पिता के वंश से या मेरी मां के वंश से प्रवेश के अधिकार दिए हैं, जिनमें दूसरों की ओर से आए हुए शापों को और खुद पर लादे गए शापों का समावेश है।

यीशु के नाम में और मसीह के लहू की सामर्थ से, मैं शत्रु की सारी सामर्थ और प्रभाव को तोड़ता हूं जिसने मेरे जीवन को प्रभावित किया है।

मैं स्वतंत्र हूं, क्योंकि यीशु ने मुझे छुटकारा दिया (स्वतंत्र किया) है!

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" (प्रेरितों के काम 10:43)।

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "(रोमियों 10:9)|

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का

दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें**: apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
सम्बंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य सम्बंधित मुद्दे
परिवार/दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक
आत्मिक समस्याएं
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
जिंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

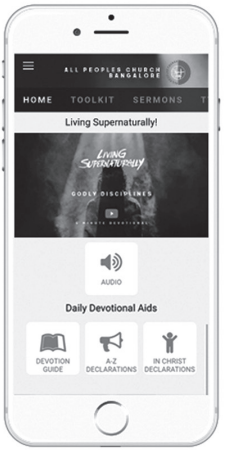

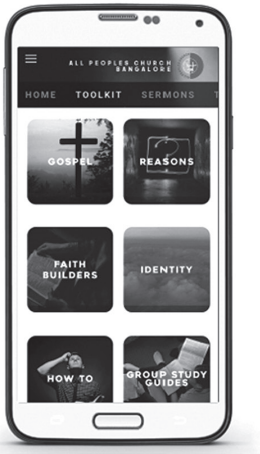

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी)में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (D.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

लोगों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनका आरम्भ पिछली पीढ़ियों में हो सकता है। इसमें से कुछ ऐसे किसी व्यक्ति के द्वारा उत्पन्न हुआ होगा जो पापमय जीवनशैली बिताते थे या पिछली पीढ़ी में शैतानी गतिविधियों में सहभागी थे। हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि पारिवारिक बन्धन क्या हैं और इन बन्धनों को कैसे तोड़ें। हमारी स्वतंत्रता या मुक्ति या छुटकारा क्रूस पर प्राप्त किया गया । यीशु शैतान के प्रत्येक काम को नाश करने के लिए आया, चाहे उसने किसी भी रीति से हमारे जीवनों में प्रवेश पाया हो।

यह पुस्तक इस बात को समझने में हमारी सहायता करती है कि व्यक्तिगत और पीढ़ीगत बंधनों को कैसे पहचानें और तोंड़ें। स्वतंत्र हों! वह भरपूर जीवन जीएं जिसे यीशु हमें देने के लिए आया!

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org